BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

# भारतीय जनांकिकी की उभरती चुनौतियाँ

**आयुष भारती,**

यू•जी•सी• नेट, शोधार्थी, विश्वविद्यालय भूगोल विभाग,

तिलकामांझी भागलपुर, विश्वविद्यालय, भागलपुर

**डॉ अनिरुद्ध कुमार**

**एसोसिएट प्रोफेसर सह विभागाध्यक्ष**

विश्वविद्यालय भूगोल विभाग, तिलकामांझी

- **सारांश :–**

किसी राष्ट्र की जनसंख्या वहां की मूल संसाधन होती है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए अनेक चुनौतियां हैं और निकट भविष्य में और नई–नई चुनौतियों के आने की आशंका है। 1950 में भारत की जनसंख्या जहां 357 मिलियन थी, वह वर्ल्ड बैंक के आंकड़े के अनुसार 71 वर्ष बाद 2021 में 4 गुनी होकर 1417 मिलियन हो गई है। "द वर्ल्ड पापुलेशन प्रोस्पेक्ट्स 2019रू हाईलाइट्स" के अनुसारए 2027 तक भारत चीन को पीछे करते हुए दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश बन जाएगा। जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई, परंतु यहां उपलब्ध संसाधनों का समुचित विकास नहीं हुआ। जिससे राष्ट्र में अनेक समस्याओं को जन्म दिया। वर्तमान में भारतीय जनांकिकी के लिए पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक समस्याएं विद्यमान है। निकट भविष्य में नए–नए टेक्नोलॉजी आने से जटिलताएं बढ़ेगी। भारत में पिछले कुछ दशकों में अनेक घटनाएं हुई है, जो जलवायु परिवर्तन को इंगित करता है। ग्लेशियर का पिघलना, औसत वायुमंडलीय तापमान में वृद्धि, भूजल स्तर में गिरावट, हिंद महासागर के जल स्तर में वृद्धि से तटीय क्षेत्रों का जलमग्न होना स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

**मुख्य शब्द : संसाधन, जनांकिकी, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय, सामाजिक, आर्थिक समस्याएं**

- **भूमिका :–**

किसी भी राष्ट्र के लिए जनसंख्या वरदान और अभिशाप दोनों में से किसी एक पहलू का परिचायक होती है। अगर राष्ट्र अपने जनसंख्या का समुचित उपयोग करती है, तो वह वरदान के रूप में साबित होता है और अगर जनसंख्या का समुचित उपयोग न हो तो वह राष्ट्र के लिए अभिशाप बन जाती है। वर्तमान समय में मानव से बड़ा कोई संसाधन नहीं है, क्योंकि वह ही प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का उपयोग में लाकर उसे संसाधन बनाता है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए यहां की बढ़ती जनसंख्या सारी समस्याओं की मूल जननी है फिर चाहे वह किसी क्षेत्र का विकास करने की हो या फिर किसी योजना को लागू करने की। संयुक्त राष्ट्र ;न्दपजमक छंजपवदद्ध की हालिया रिपोर्ट "द वर्ल्ड पापुलेशन प्रोस्पेक्ट्स 2019रू हाईलाइट्स "(जीम ॅवतसक च्वचनसंजपवद च्तवेचमबजे 2019 रू भ्पहीसपहीजेद्ध के अनुसारए 2027 तक भारत चीन को पीछे करते हुए दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला बनने की संभावना थी परन्तु 1 जुलाई 2023 को ही भारत ने चीन को जनसंख्या के मामले में द्वितीय स्थान पर स्थापित कर दिया। इस रिपोर्ट में यह भी रेखांकित किया गया है कि इस अवधि में भारत में युवाओं की जनसंख्या का अनुपात अधिक होगा।

भारत की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 1.2 बिलियन है तथा दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 17.70 प्रतिशत है । एक विकासशील राष्ट्र के लिए इतनी बड़ी जनसंख्या का भरण पोषण करना आसान नहीं होता राष्ट्र को अनेक चुनौतियों



@2025 Bihar Shodh Samaagam

का सामना करना होता है। 1950 की जनगणना में भारत की जनसंख्या 357 मिलियन थी । वर्ष दर वर्ष इसमें तीव्र गति से वृद्धि हुई। यह जनसंख्या 30 वर्षों में लगभग दुगनी हो कर 1981 में 713 मिलियन हो गई। वर्ल्ड बैंक ॅवतसक ठंदाद्ध के आकडा का अनुसार 41 वर्ष बाद 2022 में पुनः जनसंख्या दोगुनी होकर 1.417 बिलियन हो गई है। पिछले 71 वर्षों में यह जनसंख्या 4 गुनी हो गई। जिस गति से यह जनसंख्या की वृद्धि हुई उसके अनुपात में उपलब्ध संसाधनों का विकास नहीं है। इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधनों के अभाव में इतनी बड़ी जनसंख्या की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे– भोजन, आवास, चिकित्सा, शिक्षा आदि को पूरा करना भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती होगी। भारत में जनसंख्या वृद्धि में उच्च जन्म–दर, मृत्यु–दर में कमी, बुजुर्गों की बढ़ती जनसंख्या और बढ़ते प्रवासन को जनसंख्या वृद्धि के कुछ प्रमुख कारणों के रूप में देखा जाता है।

○ **वर्ष 1991,2001,2011 का जनगणना अवलोकन :–**

| वर्ष / अवलोकन | **2011** | **2001** | **1991** |
|---|---|---|---|
| कुल जनसंख्या | 1210 मिलियन | 1027 मिलियन | 846 मिलियन |
| पुरुष | 623 मिलियन | 531 मिलियन | 439 मिलियन |
| स्त्री | 586 मिलियन | 496 मिलियन | 407 मिलियन |
| वृद्धि दर | 17.70: | 21.5: | 22.49: |
| घनत्व | 382 | 324 | 270 |
| साक्षरता दर | 74.04: | 65.38: | 39: |
| लिंगानुपात | 940 | 933 | 927 |
| बाल लिंगानुपात | 914 | 927 | 945 |

- **भारत में जनसंख्या वृद्धि कारण :–**
- **भारत में जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारण :–**

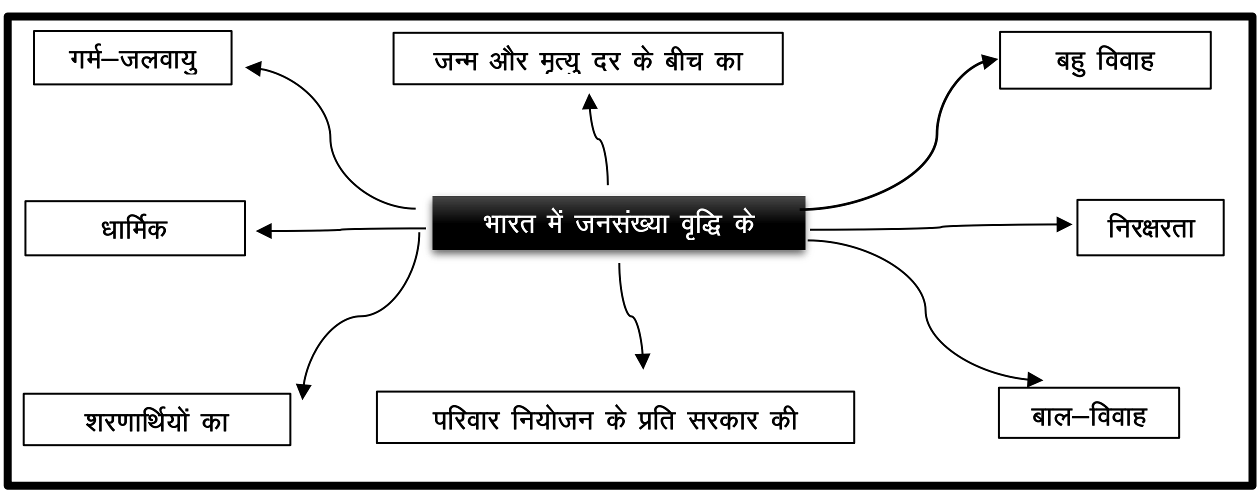

विश्व में जनसंख्या के प्रति नीति लाने वाला भारत विश्व का प्रथम राष्ट्र है। भारत में 1952 में प्रथम जनसंख्या नीति लायी फिर भी भारत की जनसंख्या में इतनी बढ़त हुई है। भारत में जनसंख्या वृद्धि के अनेक कारण सामने आते हैं, यहां साक्षरता दर की कमी है विशेषकर महिला साक्षरता का। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में महिला साक्षरता दर केवल 64.46ः रही थी। भारत में लगातार बढ़ती आर्थिक असमानता भी इसमे मुख्य भूमिका निभा रही है। गरीबों की प्रजनन दर अमीरों की तुलना में हमेशा अधिक होती है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में 833 मिलियन लोग ग्रामीण क्षेत्र में निवास करते हैं वहीं 377 मिलियन लोग नगरीय क्षेत्रों में रहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रजनन दर 4.5 बच्चे होते हैं वही यह नगरीय क्षेत्रों में 2.3 होती है। इसके अलावा धार्मिक पक्ष की जनसंख्या वृद्धि में योगदान देती है। *"बच्चे भगवान की देन"* की सोच से प्रजनन दर बढ़ती है। हिंदुओं की अपेक्षा मुस्लिमों में प्रजनन दर अधिक है। इसके अलावा सरकार की जनसंख्या के प्रति उदासीनता और लचर नीति से भी जनसंख्या वृद्धि हुई है।

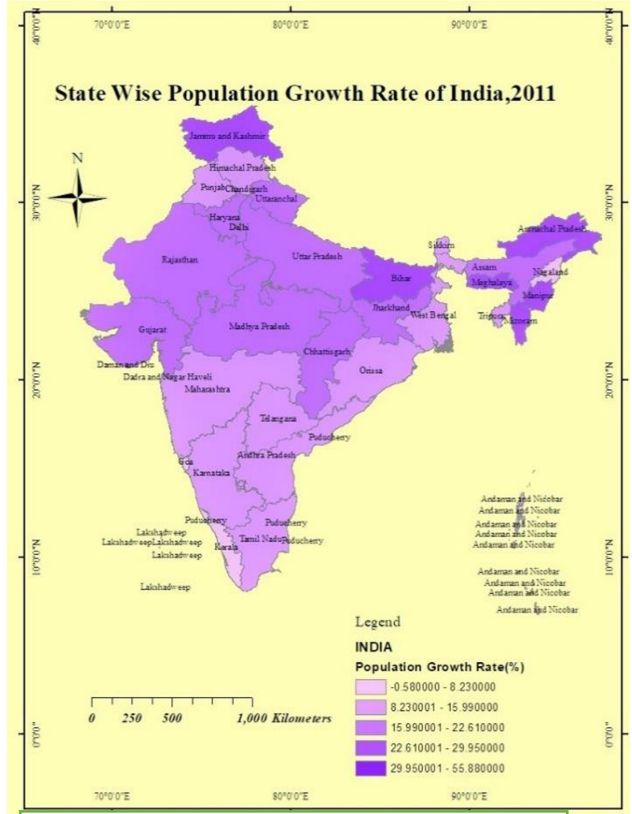


*स्रोतः– जनगणना रिपोर्ट, भारत*

❖ **भारत जनांकिकी की उभरती चुनौतियां** :–

जनसंख्या विश्व का एक प्रमुख घटक है। जनसंख्या और उनकी समस्या नियंत्रण बनी रहती है क्योंकि दोनों के बीच धनात्मक सहसंबंध होता है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए जनसंख्या संबंधी अनेक चुनौतियां हैं और निकट भविष्य में भी और भी नई–नई चुनौतियां के आने की आशंका है। उन चुनौतियां में से कुछ चुनौतियां का वर्णन अग्रलिखित हैं।

○ **पर्यावरणीय चुनौतियां** –

➢ **जलवायु परिवर्तन** –

पृथ्वी की जलवायु मानव की क्रियाकलापों से निरंतर प्रभावित एवं हुई परिवर्तित होती रही है। भारतीय जनसंख्या तथा उस जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति के लिए लगातार नए–नए अन्वेषण ;त्मेमंतबीद्ध हो रहे हैं, जो जलवायु परिवर्तन को और तेज गति से परिवर्तित कर रहा है। जलवायु के मापन के लिए जहां हम पूर्व में 35 वर्ष के आंकड़ों की गणना करते थे वह अब 30 वर्ष के आंकड़ों से ही किसी भी प्रदेश की जलवायु का निर्धारण हो रहा है। हम लगातार ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कर रहे हैं जिससे जलवायु गर्म होती जा रही है। जलवायु परिवर्तन से मानव के स्वास्थ्य, सुरक्षा, जीवन की गुणवत्ता आदि प्रभावित होते रही है। जलवायु परिवर्तन सर्वस्व पृथ्वी पर एक समान नहीं होता जिस राष्ट्र की जनसंख्या की कमी होती है, वहां पर यह परिवर्तन धीमी गति


@2025 Bihar Shodh Samaagam

से होती है। वही घनी आबादी और विकासशील राष्ट्रों में यह गति तीव्र गति से होती है। जिसका सर्वोत्तम उदाहरण भारत राष्ट्र है। भारत में विगत वर्षों में अनेक घटनाएं हुई है, जो जलवायु परिवर्तन को इंगित करता है। जिनका का वर्णन आगे हैं।

**<u>भारत में तापमान वृद्धि</u>** – भारत में तापमान में लगातार वृद्धि देखने मिल रही है जिससे संसाधनों पर और अधिक दबाव बढ़ रहा है। मिनिस्ट्री ऑफ अर्थ साइंस, भारत सरकार की एक रिपोर्ट के अनुसार, 1901–2018 के बीच भारत के औसत तापमान में 0.7 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि देखने मिली है। जहाँ 1990 में भारत का औसत तापमान 26.9 डिग्री सेल्सियस था वह 2021 में बढ़ कर 27.4 डिग्री सेल्सियस हो गया है। एक अनुमान के अनुसार, 21वी शताब्दी के अंत तक भारत का औसत तापमान में 4.4 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि देखने मिल सकती है। 1986–2015 में सबसे गर्म दिन और सबसे ठंडी रात्रि में क्रमश 0.63 डिग्री सेल्सियस तथा 0.4 डिग्री सेल्सियस तापमान वृद्धि हुई है। जनसंख्या वृद्धि से ग्रीन हाउस गैसों ;ळतममद भ्वनेम ळें.ळभ्ळद्ध के उत्सर्जन में वृद्धि, मानवजनित एरिलोसोल (Anthropogenic Aerosols) में वृद्धि तथा भूमि उपयोग ;स्न्स्ब्द्ध के पैटर्न में परिवर्तन हुआ है, जो इस तापमान की वृद्धि में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं।

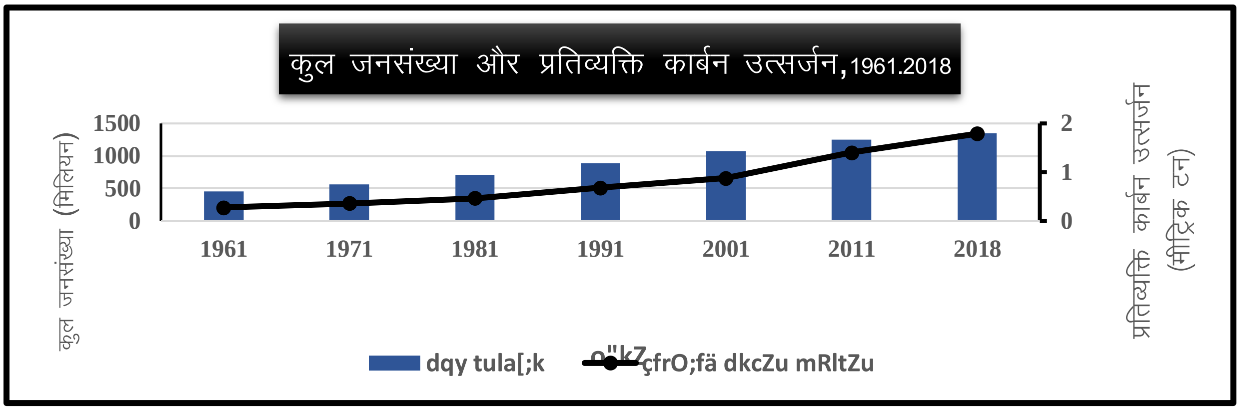


*स्रोतः– वर्ल्ड बैंक*

देश के कई हिस्से पिछले दिनों हीटवेव की चपेट में रही है। दिल्ली जैसे घनी आबादी वाले राज्य के कई जिलों में 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान दर्ज हुआ है, क्योंकि वहाँ शीतलन के लिए प्रयोग में लाने जाने वाले उपकरणों का उपयोग अधिक होता हैं जिससे ऊर्जा की खपत भी अधिक होती है। यही हाल देश के कई अन्य जिलों का भी है। मौसम संक्रमण, पूर्व मानसूनी वर्षा में कमी, पश्चिमी विक्षोभ का सक्रिय ना होना आदि इसके प्रमुख कारण है। हिट वेब का जीव जगत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

| वर्षवार हीटवेव के दिनों की संख्या | |
|---|---|
| **2022** | 280 |
| **2021** | 36 |
| **2020** | 42 |
| **2019** | 174 |


@2025 Bihar Shodh Samaagam

| | |
|---|---|
| **2018** | 90 |
| **2017** | 123 |
| **2016** | 150 |
| **2015** | 86 |
| **2014** | 144 |
| **2013** | 100 *स्रोतः– सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट* |

हीट स्ट्रोक, वन्य जीवन पर प्रभाव, उत्पादकता में कमी, स्वास्थ्य संबंधी प्रभाव, जंगलों में आग, ऊर्जा मांग में वृद्धि इस के कुछ प्रमुख प्रभाव हैं। इसके प्रभाव को कम करने के लिए अल्पकालीन उपाय के साथ साथ हमें जलवायु परिवर्तन के प्रति दीर्घकालीन नीतियों को भी लागू करना होगा। तापमान वृद्धि से उत्तराखंड के गंगोत्री ग्लेशियर में परिवर्तन हुआ है। इसरो (ISRO) के अनुसार, पिछले 15 वर्षों (2001–2016) में 0.23 वर्ग किलोमीटर ग्लेशियर पिघल चुका है।

| 2022 में हीट वेव से ग्रसित देश के शीर्ष राज्य | |
|---|---|
| **राजस्थान** | 25 दिन |
| **मध्य प्रदेश** | 25 दिन |
| **हिमाचल प्रदेश** | 21 दिन |
| **गुजरात** | 19 दिन |
| **जम्मू एंड कश्मीर** | 16 दिन |
| **हरियाणा** | 15 दिन |
| **दिल्ली छब्** | 15 दिन |
| **उत्तर प्रदेश** | 11 दिन |
| ***स्रोतः– सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट*** | |

➢ **हिंद महासागर के जलस्तर में परिवर्तन** –

*Assessment of Climate Change over the Indian Region,MoES* की एक रिपोर्ट के अनुसार, हिंद महासागर के सतह में 1951 से 2015 तक 1 डिग्री सेल्सियस तापमान की वृद्धि दर्ज की गई है जहां इसी अवधि के दौरान विश्व के सभी महासागरों का औसत तापमान में 0.4 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि अंकित हुई। इस रिपोर्ट में यह भी उल्लेखित किया गया है कि इसी प्रकार जलस्तर में भी परिवर्तन हुआ है। विश्व भर में महासागरों के जलस्तर में वृद्धि आ रही है। इसका एक मात्र कारण ग्लोबल वार्मिंग(Global Warming) जिससे महाद्वीपीय और समुद्र के पानी का थर्मल विस्तार हो रहा है। उत्तरी हिंद महासागर जिससे निकट भारत है वहां 1874 से 2004 के बीच औसतन 1.06–1.75उउ प्रति वर्ष की वृद्धि हुई परंतु पिछले ढाई दशकों (1993–2004) में यह बढ़कर 3ण्3उउ मीटर प्रतिवर्ष हो गई है। 21वी शताब्दी के अंत तक जहां विश्व भर में लगभग 180उउ वृद्धि देखने को मिलेगी वहीं यह उत्तरी हिंद महासागर में 300उउ की वृद्धि होगी। समुद्र के जल स्तर में वृद्धि से भारतीय तट पर स्थित शहर मुंबई, कोच्चि, बैंगलोर, चेन्नई, विशाखापट्टनम और तिरुवंतपुरम के कुछ हिस्से 2050 तक जलमग्न हो जाएंगे।


@2025 Bihar Shodh Samaagam

कोलकाता के दक्षिण में 150 किलोमीटर दूर सुंदरवन डेल्टा में स्थित घोरमारा द्वीप शीघ्र ही जलमग्न हो जाएगा क्योंकि 1972 से 2010 के दौरान इस द्वीप का आधा क्षेत्रफल समुद्र में लुफ्त हो गया इसी क्षेत्र के दो अन्य द्वीप पहले ही लुप्त हो गए हैं।

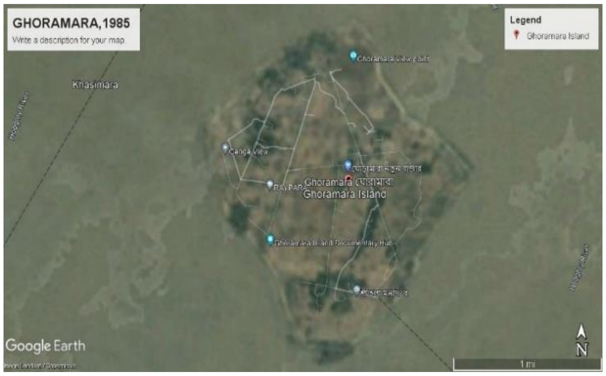

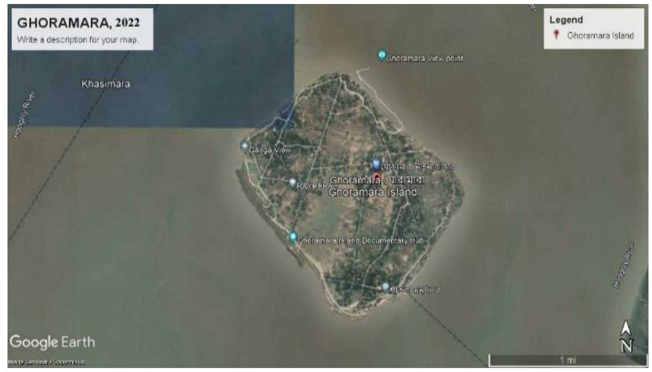


स्रोतः– *Google Earth Satellite Image*

**<u>जोखिम तट वाले राज्य</u>** –

| राज्य | | तट की लंबाई (किमी•) | अपरदन | |
|---|---|---|---|---|
| | | | किमी• | : |
| पश्चिमी तट | गुजरात | 1945ण6 | 537ण5 | 27ण6 |
| | दमन दीप | 31ण83 | 11ण02 | 34ण6 |
| | महाराष्ट्र | 739ण57 | 188ण26 | 25ण5 |
| | गोवा | 139ण64 | 26ण82 | 19ण2 |
| | कर्नाटक | 313ण02 | 74ण34 | 23ण7 |
| | केरल | 592ण96 | 275ण33 | 46ण4 |
| पूर्वी तट | तमिलनाडु | 991ण47 | 422ण94 | 42ण7 |
| | पांडुचेरी | 41ण66 | 23ण42 | 56ण2 |
| | आंध्र प्रदेश | 1027ण58 | 294ण89 | 28ण7 |
| | उड़ीसा | 549ण5 | 140ण72 | 25ण6 |
| | पश्चिम बंगाल | 534ण35 | 323ण07 | 60ण5 |
| | | **6907ण18** | **2318ण31** | **33ण6** |

*स्रोतः– लोकसभाः अप्रैल 2022ः।टैप्ट स्टेट ऑफ द ग्लोबल क्लाइमेट रिपोर्ट, 2021*

**<u>वर्षा में परिवर्तन</u> –** भारत की आधी से अधिक जनसंख्या कृषि पर आधारित है और यहां के अधिकांश कृषिवर्षा पर निर्भर है। भारत में ग्रीष्मकालीन मानसून जून से सितंबर में आता है। 1951 से 2005 तक इस मानसून में 6ः की कमी हुई है। यह कमी भारत के घनी आबादी वाले प्रदेश सिंधु गंगा के मैदान और पश्चिमी घाट में देखने मिलती है, जहां भारत की अधिकांश जनसंख्या निवास करती है।

| Drought Year in the past centuries. | |
|---|---|
| **Period** | **No. of years** |
| 1801.1850 | 9 |
| 1851.1900 | 9 |
| 1901.1950 | 12 |
| 1951.2003 | 11 |

**Details of Droughts Since Independence.**

| S. N. | Year | Percentage of affected area in India | Category |
|---|---|---|---|
| 1 | 1951 | 33.2 | Moderate |
| 2 | 1952 | 25.8 | Slight |
| 3 | 1965 | 42.9 | Moderate |
| 4 | 1966 | 32.3 | Moderate |
| 5 | 1968 | 20.6 | Slight |
| 6 | 1969 | 19.9 | Slight |
| 7 | 1971 | 13.3 | Slight |
| 8 | 1972 | 44.4 | Severe |
| 9 | 1974 | 29.3 | Moderate |
| 10 | 1979 | 39.4 | Moderate |
| 11 | 1982 | 33.1 | Moderate |
| 12 | 1985 | 30.1 | Moderate |
| 13 | 1986 | 19.0 | Slight |
| 14 | 1987 | 49.2 | Severe |
| 15 | 2002 | Areas in 14 States | Severe |

<u>सूखा–</u> पिछले 6–7 दशकों से भारतीय मानसून में कमी होने से पूरे भारत में सूखे की प्रवृत्ति में वृद्धि कर दी है। 1951 से 2016 के बीच भारत के अलग–अलग क्षेत्रों विशेषकर मध्य भारत, दक्षिण पश्चिम तट, दक्षिणी प्रायद्वीप और उत्तर पूर्वी भारत में औसतन प्रति दशक 2 सूखे की घटना देखने मिलती है। इसी अवधि में सूखे के क्षेत्र में 1.3ः प्रति दशक वृद्धि हुई है। देश के कुल क्षेत्र में से 16ः सूखा संभावित क्षेत्र है। वार्षिक रूप से देश में करीब 5 करोड़ लोग सूखे के संकट से प्रभावित होते हैं। बुआई किये गये क्षेत्र में से कुल 68ः क्षेत्र अलग–अलग मात्रा में सूखा प्रभावित हैं, 35ः क्षेत्र में 750 मिली मीटर से 1125 मिली मीटर तक वर्षा होती है और ये सूखा संभावित क्षेत्र हैं। देश के शुष्क (19. 6ः), अर्द्ध–शुष्क (37ः) और उप–नमी (21ः) क्षेत्रों में अधिकतर सूखा संभावित क्षेत्र पाये जाते हैं, जो कि इसके कुल जमीन वाले भाग 32.90 करोड़ हेक्टेयर का 77.6ः में फैला हुआ है। भारत में वार्षिक औसत वर्षा 1160 मिली मीटर होती है। हालांकि 85ः वर्षा 100–120 दिनों तक (दक्षिणी–पश्चिमी मानसून के दिनों में) हीं होती है। 33ः क्षेत्र में 750 मिली मीटर से भी कम वर्षा होती है और ये गंभीर सूखा संभावित क्षेत्र हैं। 21ः क्षेत्र में 750 मिली मीटर से भी कम वर्षा होती है (द्विपीय क्षेत्र और राजस्थान)। 10 वर्षों में से 4 वर्ष अनियमित वर्षा होती है। सिंचाई क्षमता 140 मिलियन एचए हैं (76 एमएचए सतह, 64 एमएचए धरती के अंदर का पानी)। धरती के अंदर के पानी की कमी और सतही पानी की सीमितता से यह इंगित होता है कि बुआई वाले सभी क्षेत्र की सिंचाई नहीं की जा सकती है। आबादी में वृद्धि, तेजी से होती औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, फसल तीव्रता और धरती के अंदर कम होते पानी स्तर आदि के कारण प्रति

*स्रोतः– सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट*

व्यक्ति पानी उपलब्धता कम हो रही है। यह समस्या और अधिक होने वाली है। कुछ भागों या अन्य भागों में सूखा होना अवश्यंभावी है।

## ➢ उष्णकटिबंधीय चक्रवात –

बीसवीं सदी (1951–2018) के मध्य से उत्तरी हिंद महासागर बेसिन पर उष्णकटिबंधीय चक्रवातओं की वार्षिक आवृति में उल्लेखनीय कमी आई है। इसके विपरीत 2000–2022 के दौरान मानसून के बाद के मौसम के दौरान बहुत गंभीर चक्रवाती तूफान की आवृत्ति में काफी वृद्धि देखी गई है। इन प्रवृत्तियों पर मानव स्पष्ट रुप से तो जिम्मेवार नहीं है पर कहीं ना कहीं वही इस का जनक है। उनके क्रियाकलाप के द्वारा यह परिवर्तन आया है।

| **उष्णकटिबंधीय चक्रवात** | |
|---|---|
| अवधि | चक्रवातओ की संख्या |
| 1700.1750 | 9 |
| 1750.1800 | 8 |
| 1800.1850 | 8 |
| 1850.1900 | 7 |
| 1900.1999 | 16 |
| 2000.2022 | 22 |

## मरुस्थलीकरण में वृद्धि –

वनों की अंधाधुंध कटाई और पर्यावरण को नुकसान देने वाली मानवीय गतिविधियों से पृथ्वी की उपजाऊ जमीन लगातार सिकुडती जा रही है। उपजाऊ जमीन मरुस्थल में बदल रहा है। आज भारत समेत पूरा विश्व मरुस्थलीकरण की समस्या से जूझ रहा है। मरुस्थलीकरण से हर साल लाखों लोग विस्थापित हो रहे हैं। मरुस्थलीकरण से शुष्क, अर्द्ध–शुष्क, निर्जन इलाकों की भूमि रेगिस्तान में परिवर्तित होते जा रही है। जिसके परिणाम स्वरूप प्राकृतिक वनस्पतियों का क्षरण कृषि उत्पादकता में कमी के साथ–साथ पशुधन एवं जलवायु घटनाएं भी प्रभावित होती है। भारत में भू–क्षरण का क्षेत्र 96.40 मिलियन हेक्टेयर है, जो कुल भौगोलिक क्षेत्र का 29.30ः है। विज्ञान और पर्यावरण केंद्र ;ब्मदजतम वित ेबपमदबम ंदक म्दअपतवदउमदज. ैब्म्द्ध की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2003–2005 और 2011–2013 के बीच 18.7 लाख हेक्टेयर भूमि का मरुस्थलीकरण हुआ है। भारत की 37ः क्षेत्रफल शुष्क या अर्द्ध–शुष्क भूमि के रूप में है, जिसमें से 30ः भूमि भू–क्षरण की प्रक्रिया में तथा 25ः भूमि मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया में है। मरुस्थलीकरण से ना केवल मानव बल्कि वन्यजीव भी प्रभावित होता है। भूमि के बंजर होने से कृषि उत्पाद में कमी आती है, जिससे निकट भविष्य में खाद्यान्न की कमी देखने को मिल सकती है।

➢ **<u>वायु प्रदूषण</u> –**

विश्व भर में वायु प्रदूषण एक छुपा हत्यारा है। भारत में वायु प्रदूषण का स्तर विश्व में सबसे अधिक है, जो देश के स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए भारी खतरा है। भारत की शत–प्रतिशत 1.4 विलियन लोग विभिन्न प्रकार के स्रोतों से निकलने वाले सबसे हानिकारक प्रदूषण च्ड 2ण्5 के संपर्क में में आने से फेफड़े का कैंसर, स्ट्रोक और हृदय रोग जैसे घातक बीमारियां हो सकती है। 2019 में 1.7 मिलियन लोग की अकाल मृत्यु इसके संपर्क में रहने से हुआ है। इसका प्रभाव अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक पड़ता है, 2017 में इसके प्रभाव के घातक बीमारियों के कारण जी•डी•पी• का 30 से 78 अरब डॉलर का नुकसान हुआ, जो कुल जी•डी•पी• 0.3ः.0.9ः था। च्ड 2ण्5 विभिन्न स्रोतों से आता है कोयला, तेल, बायोमास, अवशेष जलाने से उत्सर्जित होता है। इसके अलावा हवा में उड़ने वाली धूल भी शामिल है। लगातार बढ़ती कोयले की खपत, आर्थिक विकास, उद्योगों की स्थापना आदि इसके प्रमुख कारण है। वायु प्रदूषण की वजह से भारत में हर रोज 3883 लोगों की मृत्यु होती है। दुनिया की 50 प्रदूषित शहर में 35 अकेले भारत में ही है।

*स्रोतः– संकट प्रबंधन योजना– सूखा (राष्ट्रीय), कृषि एवं सहयोग विभाग, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार*

| **वर्ष 2010 से 2016 तक च्ड 2ण्5 उत्सर्जन मे परिवर्तन** | |
|---|---|
| चीन | .17ः |
| भारत | 13ः |
| अमेरिका | .15ः |
| यूरोपीय यूनियन | .20ः |
| *"वनतबमरू . ळतममद च्मंबम प्दकपं त्मचवतजऍ्भ्* | |

**<u>जल संकट</u> –**

जल ऑक्सीजन के बाद दूसरी सबसे बड़ी जरूरत है। पृथ्वी पर जीवन जल से ही संभव है। भारत के साथ–साथ पूरा विश्व इस समस्या से जूझ रहा है। भूमिगत जल का स्तर लगातार नीचे गिर रहा है। भारत की उभरती जनसंख्या के लिए तीव्र गति से नगरीकरण हो रहा है और नगरीकरण के परिणाम स्वरूप उस क्षेत्र के लिए जल का एक मुख्य स्रोत केवल भूमिगत जल है। उद्योगों से जल की बर्बादी, उद्योगों से जल प्रदूषण, तीव्र गति से नगरीकरण, वनों की कटाई आदि कारणों से जलवायु परिवर्तन हो रहा है, जिससे पृथ्वी लगातार सिकुड़ती जा रही है। भारत में यह समस्या लगातार गंभीर होती जा रही है, यहां कृषि और खाद्य उत्पादन में भूमिगत जल एक मुख्य स्रोत है। यहां की 80ः जनसंख्या भूमिगत जल पर निर्भर है। हरित क्रांति के बाद कृषक भूमिगत जल पर और अधिक निर्भर हो गए। 50ः से अधिक जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। भारत में विश्व की 17.1ः जनसंख्या निवास करती है और यहां मात्र विश्व का 4ः ताजा जल की उपलब्धता है। जल की प्रति

व्यक्ति उपलब्धता में भारत का रैंक 132 है वहीं पानी की गुणवत्ता की रैंकिंग मे यह स्थान 122 है। अंतरराष्ट्रीय मापदंडों के अनुसार एक देश को जल संकटग्रस्त के रूप में वर्गीकृत तब किया जा सकता है, जब वहां पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 1700 मीटर क्यूब से कम हो। 2010 में भारत में प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता 1588 मीटर क्यूब थी। 2019 के *वॉटर स्ट्रेस इंडेक्स ;ॅंजमत`जतमे प्दकमगद्ध* के अनुसार, देश के 20 बड़े शहरों में से 11 जल संकट की खतरनाक स्थिति का सामना कर रहे हैं। वही 7 शहर ऐसे हैं, जो उच्च जोखिम वाली श्रेणी में सूचीबद्ध हैं। लगातार बढ़ती जनसंख्या से पानी की मांग में लगातार वृद्धि हो रही है। आने वाले दिनों में बेंगलुरु, सूरत, दिल्ली, जैसे शहरों में जल संकट पैदा होना स्वाभाविक है। इसके निदान हेतु जनसंख्या पर नियंत्रण, कम वर्षा वाले श्रेणियों क्षेत्रों में पानी की खपत कम करने वाले फसलों को प्रोत्साहन देना, जल उपयोग दक्षता को बढ़ाना, जल संरक्षण हेतु जन जागरूकता आदि करना अति आवश्यक है, क्योंकि भारत की अपेक्षा अमेरिका में जल उपलब्धता कम है लेकिन वहां के कुछ क्षेत्रों में अभी तक जल संकट की कोई समस्या उत्पन्न नहीं हुई है।

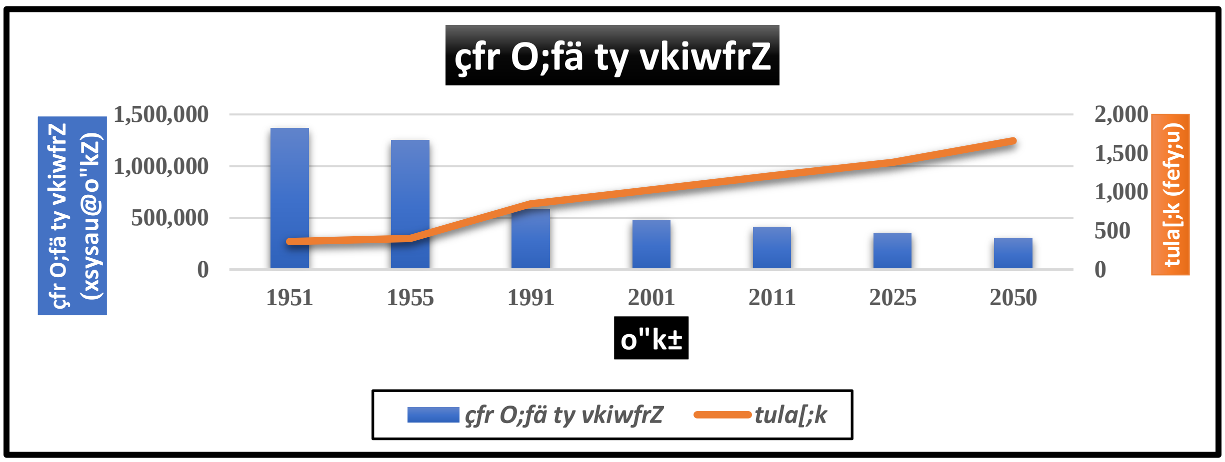


*स्रोतः–के• पी• एम• जी• अंतरराष्ट्रीय 2010: ऑफिस ऑफ द रजिस्टार जनरल – सेंसस कमिश्नर, भारत*

- <u>**आर्थिक चुनौतियां**</u>

➢ <u>**गरीबी और जनसंख्या**</u> – भारत मे गरीबी और जनसंख्या में धनात्मक सहसम्बन्ध होता है। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ती है वैसे–वैसे गरीबी भी बढ़ती है। हमारे देश की इतनी गरीबी का कारण लगातार तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या भी है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 25.7: लोग गरीबी रेखा के नीचे है वहीं शहरी क्षेत्र में यह आंकड़ा 13.7: है। सतत विकास के 17 लक्षणों में प्रथम लक्ष्य गरीबी को खत्म करना है। भारत के जिस राज्य में जनसंख्या अधिक है, वहां गरीबों की संख्या भी अधिक होती है। बिहार(51.91:) झारखंड(42.16:), उत्तर प्रदेश(37.79:), मध्य प्रदेश(36. 65:) इसके अच्छे उदाहरण है। हालांकि हाल के दिनों में आर्थिक विकास में तेजी से इसमें कमी आई है। गरीबी कम करने के लिए और समावेशी विकास को सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर बड़े प्रयासों की आवश्यकता है।

| गरीबी रेखा के नीचे की जनसंख्या और उसका प्रतिशतः– | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | ग्रामीण | | शहरी | | संयुक्त रूप में | |
| **वर्ष** | जनसंख्या (लाख) | जनसंख्या (:) | जनसंख्या (लाख) | जनसंख्या (:) | जनसंख्या (लाख) | जनसंख्या (:) |
| **1973–74** | 2613 | 56.4 | 600 | 49.0 | 3213 | 54.9 |
| **1977–78** | 2642 | 53.1 | 646 | 45.2 | 3289 | 51.3 |
| **1983** | 2520 | 45.7 | 709 | 40.8 | 3229 | 44.5 |
| **1987–88** | 2319 | 39.1 | 752 | 38.2 | 3070 | 38.9 |
| **1993–94** | 2440 | 37.3 | 763 | 32.4 | 3204 | 36.0 |

**बेरोजगारी –**

जनसंख्या और बेरोजगारी में भी सामान्यतः धनात्मक संबंध होता है। ज्यों–ज्यों जनसंख्या बढ़ती है, त्यों–त्यों समाज में बेरोजगारी भी बढ़ती जाती है। बेरोजगारी को खत्म करने के लिए जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण अति आवश्यक है। बढ़ती बेरोजगारी से आश्रित जनसंख्या में वृद्धि होती जाती है। पिछले 6 दशकों (1960–2021) में आश्रित जनसंख्या का औसत 68.21: रहा है, जिसमें न्यूनतम 48.27: वर्ष 2021 में तथा अधिकतम 81.52: 1966 में रहा है। भारत को युवाओं का देश कहा जाता है। *उपदपेजतल वि रिंइवनत ;2013.14द्ध* के अनुसार, भारत में 20 वर्ष से कम युवाओं की संख्या 54 करोड़ है, जो कुल जनसंख्या का 41: है। भारत हर वर्ष 30 लाख युवाओं को स्नातक या परास्नातक की डिग्री देता है। ऐसे में प्रत्येक तीन में से एक युवा बेरोजगार रह जाते हैं अर्थात प्रत्येक वर्ग 10 लाख बेरोजगार उत्पन्न होते हैं। *सीएमआईई (CMIE- Centre वित Monitoring Indian Economy)* की मई–अगस्त 2022 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में बेरोजगारी दर 7.43: है। बढ़ती बेरोजगारी से संसाधनों पर बढ़ता दबाव, धीमी आर्थिक विकास, गिरता जीवन स्तर आदि परिणाम उभर कर आते हैं।

| ➢ **Country** | ➢ **Unemployment**<br>➢ **Rate (%)** |
|---|---|
| ➢ Pakistan | ➢ 12% |
| ➢ India | ➢ 7.6% |
| ➢ China | ➢ 5.4% |
| ➢ Bangladesh | ➢ 5.4% |
| ➢ Sri Lanka | ➢ 4.3% |
| ➢ Nepal | ➢ 3% |
| ➢ *Source: -ILO (International Labour Organization),2022* | |

➢ **प्रति व्यक्ति आय में कमी** – जनसंख्या की वृद्धि से प्रति व्यक्ति आय में नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पिछले 50 वर्षों में देश की आय प्रति वर्ष 3.6% की दर से बढ़ी है, परंतु वही प्रति व्यक्ति आय में यह वृद्धि इससे आधी से भी कम मात्र 1.5% प्रतिवर्ष रही है, क्योंकि प्रति व्यक्ति आय कि गणना राष्ट्र की कुल आय में राष्ट्र की कुल जनसंख्या से विभाजित करके निकाला जाता है।

**प्रति व्यक्ति आय** = राष्ट्र की कुल आय / राष्ट्र की कुल

| वर्ष | जी•डी•पी• (USD Billion) | प्रति व्यक्ति आय (USD) | जी•डी•पी• में वृद्धि (%) | प्रति व्यक्ति आय (%) |
|---|---|---|---|---|
| 1961 | 39.23 | 85.4 | X | X |
| 1971 | 67.35 | 118.6 | 71.67% | 38.87% |
| 1981 | 193.49 | 270.5 | 187.29% | 128.07% |
| 1991 | 270.11 | 303.1 | 28.36% | 12.05% |
| 2001 | 485.44 | 451.6 | 79.71% | 48.99% |
| 2011 | 1820 | 1458.1 | 274.91% | 222.87% |
| 2021 | 3170 | 2277.4 | 74.17% | 56.18% |

*स्रोत:– वर्ल्ड बैंक*

➢ **विकास दर में कमी** – किसी राष्ट्र में वहां की अति जनसंख्या उस राष्ट्र के विकास दर को धीमा कर देती है, क्योंकि जनसंख्या के अधिक होने से वहां गरीबी, बेरोजगारी, न्यून प्रति व्यक्ति आय, साक्षरता दर की कमी आदि जैसे समस्याएं जन्म ले लेती है। यह सभी विकास दर को धीमा करने में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। इसके परिणाम स्वरूप लोगों का जीवन स्तर निम्न होता चला जाता है। जिस राष्ट्र में संसाधनों की तुलना में जनसंख्या अधिक होती है, वहां ऐसी समस्या उत्पन्न होती है। भारत इसका अच्छा उदाहरण है।

○ **सामाजिक चुनौतियां** –

➢ **भ्रष्टाचार** – भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में भ्रष्टाचार एक अभिशाप की तरह है। बढ़ती जनसंख्या तथा उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की सोच ने भ्रष्टाचार की दर को और बढ़ाया है। लोग सही गलत को भूल कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। भ्रष्टाचार सार्वजनिक व्यय को आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं से दूर कर देता है। वे

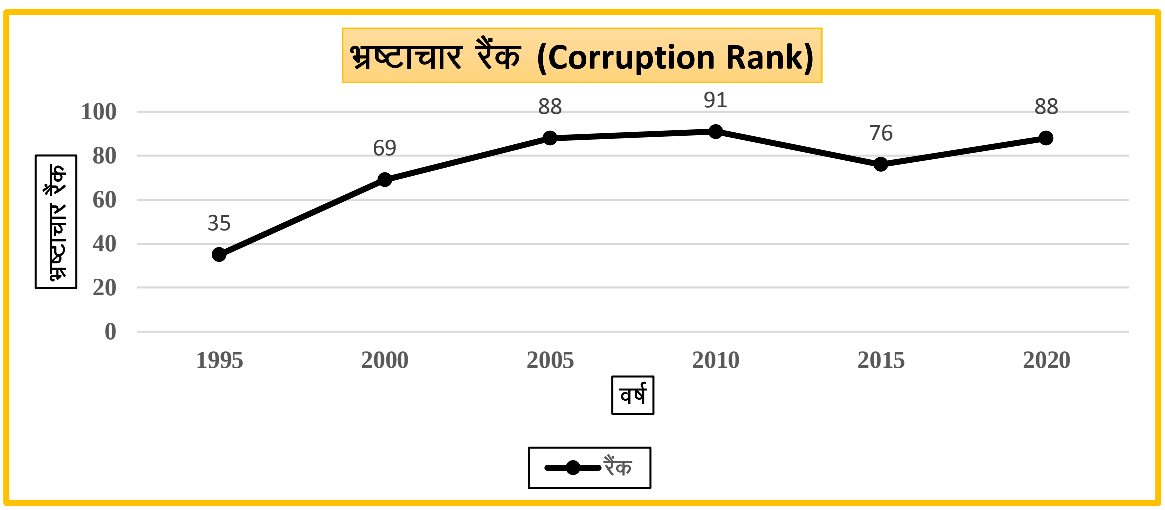




*स्रोत:– भ्रष्टाचार बोधक सूचकांक, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल*

राष्ट्र जहां भ्रष्टाचार का स्तर काफी अधिक होता है, वहां ना तो आर्थिक विकास पर ध्यान दिया जाता है और ना ही अन्य क्षेत्रों पर पर्याप्त खर्च किए जाते हैं।

**खाद्य सुरक्षा** –बढ़ती जनसंख्या कोविड–19 महामारी और विभिन्न प्रकार के प्रतिबंधों ने कई लोगों के लिए खाद्य संकट पैदा कर दिया है जो अपने और अपने परिवार का पेट भरने के लिए पर्याप्त भोजन तक पहुंचाने के लिए संघर्ष कर रहे है। *FAO (Food and Agriculture Organization)* dh *"The State of Food Security and Nutrition पद जीम ॅवतसकए 2020श* रिपोर्ट के अनुसार भारत में 189.2 मिलियन लोग कुपोषित हैं, जो की कुल जनसंख्या का 14ः है, जो बांग्लादेश, रूस, मैक्सिको, जापान आदि जैसे देशों की जनसंख्या से भी अधिक है।

| देश | कुपोषित लोग | जनसंख्या का प्रतिशत |
|---|---|---|
| भारत | 194ए400ण000 | 14ण37ः |
| चीन | 121ए400ए000 | 8ण50ः |
| पाकिस्तान | 40ए000ए000 | 18ण85ः |
| नाइजीरिया | 26ए600ए000 | 13ण07ः |
| बांग्लादेश | 24ए200ए00 | 15ण00ः |

*स्रोतः– वर्ल्ड बैंक*

उपरोक्त आकडे से स्पष्ट है कि विश्व की सबसे अधिक कुपोषित आबादी विश्व की दूसरी सबसे आबादी वाले देश भारत में ही विद्यमान है। पोषित भोजन के अभाव में 5 वर्ष से कम उम्र के 20ः बच्चे ऐसे हैं, जिनका वजन कम है। 31ः बच्चे ऐसे हैं जो बौने हैं तथा 51ः से अधिक महिलाएं *एनीमिया ;।दमउपंद्ध* से ग्रसित हैं। यद्यपि कि भारत में खाद्यान्न की कमी नहीं है परंतु दोषपूर्ण वितरण प्रणाली तथा प्रशासन की लापरवाही है। पोषण संबंधी जानकारी और जागरूकता का अभाव है।

**अपराध दर** – बढ़ती जनसंख्या तथा उस बढ़ती जनसंख्या की मांग की पूर्ति के लिए संसाधनों का अभाव देश में होता है लोगो को अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु अनैतिक मार्ग को चुनना पड़ता है, जिससे अपराधियों की संख्या में वृद्धि देखने मिलती है। बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी दर वृद्धि, शिक्षा का अभाव इत्यादि इसके लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है।

| **स्वास्थ्य सुविधाओं की निम्न गुणवत्ता से मृत्यु (1,00,000)** | |
|---|---|
| देश | मृत्यु |
| भारत | 122 |
| पाकिस्तान | 119 |
| बांग्लादेश | 57 |
| नेपाल | 93 |
| चीन | 46 |
| श्रीलंका | 51 |

**स्वास्थ्य संबंधी समस्या** – कोविड–19 महामारी ने भारत की स्वास्थ सुविधाओं की पोल खोल दी है। भारत में चिकित्सा की लचर स्थिति से लाखों लोगों की मृत्यु हुई। जनसंख्या के अनुरूप चिकित्सा सुविधाओं का विकास ना होना इसका मुख्य कारण है। *जीम स्ंदबमज* की एक रिपोर्ट के अनुसार, 136 देशों में भारत की स्थिति सबसे खराब है। जहां प्रतिवर्ष 2. 4 मिलियन लोगों की मृत्यु उपचार योग स्थिति से हो जाती है। भारत में 1918 से 2022 तक कुल 13 एपिडेमिक ;म्चपकमउपबद्ध आ चुके हैं, जिसमें करोड़ों लोगों की मृत्यु हो गई है। कोविड–19, स्पेनिश फ्लू, फ्लैग, चेचक आदि इसके अच्छे उदाहरण है। चिकित्सा पर 2000 में जहां जी•डी•पी• का 4.03ः खर्च किया जाता था, वहीं 2019 में यह घटकर 3. 01ः पर आ गया। अगर भारत की जनसंख्या में कमी रहती तो शायद भारत को कोविड–19 महामारी में इतना नुकसान ना झेलना पड़ता। लोगों को जल्द से जल्द टीकाकरण और आर्थिक स्थिति में और तेजी आती। भविष्य में और अनेक महामारी आने की संभावना है, इसके रोकथाम के लिए हमें जनसंख्या पर नियंत्रण और अपने स्वास्थ सुविधाओं को स्थिति के अनुकूल और विकसित करना होगा। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार 2022 में भारत में डॉक्टर और जनसंख्या का अनुपात 1:834 है।

**निष्कर्ष**

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता हैं कि जनसंख्या की वृद्धि सारी समस्याओं की मूल जननी है। इसका सबसे अधिक प्रभाव पर्यावरण पर पड़ता है। जलवायु परिवर्तन, तापमान में वृद्धि, जल संकट आदि इसके अच्छे उदाहरण है। इसके अलावा भारत की जनांकिकी सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों के लिए चुनौती उत्पन्न कर रही है। बेरोजगारी, अपराध दर, प्रति व्यक्ति आय में कमी, ह्यूमन डेवलपमेंट इंडेक्स ;भ्क्प्द्ध का नीचे आना आदि इसके उदाहरण है। इन सभी समस्याओं से भारत की स्थिति विश्व पटल पर धूमिल होती है। आर्थिक–सामाजिक असमानता यहां पर्याप्त रूप से विद्यमान है। कोविड–19 जैसी महामारी से देश की समस्याओं में आग का घी का काम किया है। कृषि प्रधान देश होते हुए भी भारत में विश्व के सबसे बड़ी कुपोषित जनसंख्या है। सतत विकास के लक्ष्यों को पूरा करने में भारत की जनसंख्या बाधा बना हुआ है। हमें आने वाले समय में वर्तमान समस्याओं के साथ–साथ भविष्य की आने वाली समस्याओं पर भी ध्यान रखना होगा। इसके लिए हमें अल्पकालीन उपाय के साथ साथ दीर्घकालिक उपायों पर भी गंभीर रूप से कार्य करने की आवश्यकता है।

❖ <u>संदर्भ सूची</u> :–


- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, भारत सरकार
- मिनिस्ट्री ऑफ अर्थ साइंस, भारत सरकार
- डाउन टू अर्थ
- अंतर्राष्ट्रीय लेबर ऑर्गेनाइजेशन
- ग्रीनपीस इंडिया रिपोर्ट, डब्ल्यूएचओ
- भारतीय जनगणना विभाग
- सेंट्रल वॉटर कमिशन, भारत सरकार
- मिनिस्ट्री ऑफ लेबर, भारत सरकार
- दृष्टि आईएएस
- जनसंख्या भूगोलः आर॰ सी॰ चांदना
- वर्ल्ड बैंक रिपोट
- द लासेंट, रिपोट 2018
- स्वास्थ्य विभाग, भारत सरकार
- Caldwell, J. C. (1994). New challenges for demography. *Journal of the Australian Population Association*, *11*(1), 9–19. https://doi.org/10.1007/bf03029422
- Peters, G. L., & Larkin, R. P. (1983). *Population Geography: Problems, Concepts, and Prospects* (p. 340).
- Agarwala, S. N. (1972). *India's Population Problems* (p. 196).
- Agrawal, K. P. (n.d.). *POPULATION EXPLOSION: A Root Cause of All Problems* (p. 129). Rudra Publications.
- Siddiqui, N. A. (1976). *Population Geography of Muslims of India* (p. 296). New Delhi : S. Chand.
- Chaurasia, A. R. (2019). *Population and Sustainable Development in India* (p. 257). Springer Nature.
- Jain, S., & Shyam, M. (2024). *Population Census in India: A Futuristic Perspective* (p. 148). Taylor & Francis.
- Satia, J. K., & Jejeebhoy, S. J. (1991). *The Demographic Challenge: A Study of Four Large Indian States* (p. 300).